छठ पूजा व्रत कथा

पुराणों के अनुसार प्रियंवद नाम के एक राजा थे, जिनकी कोई संतान नहीं थी। तब महर्षि कश्यप ने पुत्र प्राप्ति के लिए राजा के यहां यज्ञ का आयोजन किया। महर्षि ने प्रियंवद की पत्नी मालिनी को यज्ञ के लिए बनाई गई खीर खाने को कहा। खीर के प्रभाव से राजा और रानी को पुत्र की प्राप्ति हुई लेकिन वह मृत था।

प्रियंवद पुत्र को लेकर श्मशान गए और पुत्र वियोग में प्राण त्यागने लगे। उस समय भगवान की पुत्री देवसेना प्रकट हुईं। उन्होंने राजा से कहा कि मैं सृष्टि की मूल प्रकृति के छठे अंश से उत्पन्न होने के कारण षष्ठी कहलाती हूं। माता ने राजा को अपनी पूजा करने का आदेश दिया और दूसरों को भी इस पूजा के लिए प्रेरित करने को कहा।

राजा ने पुत्र प्राप्ति की कामना से देवी षष्ठी का व्रत रखा और शीघ्र ही उन्हें पुत्र की प्राप्ति हुई। जिस दिन राजा ने यह व्रत रखा, वह कार्तिक शुक्ल षष्ठी तिथि थी। तभी से छठी मैया की पूजा की परंपरा शुरू हुई।

pdfinbox.com